विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय विषय संस्कृत दिनांक 15-1-22 वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पांडेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

पद परिचय के परिभाषा को कॉपी पर लिख कर याद कीजिए।

8 पद-परिचयः

संस्कृत भाषा में शब्दों के साथ जब 'सुबन्त' तथा 'तिङन्त' प्रत्ययों का प्रयोग होता है, तो वे पद बन जाते हैं। यथा– 'राम' शब्द में जब विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग होता है, तो वह 'रामः' बनता है। धातुओं में तिङ्न्त प्रत्ययों का प्रयोग होने से 'भवति' आदि रूप बनते हैं।
इस प्रकार पद के दो भेद होते हैं–

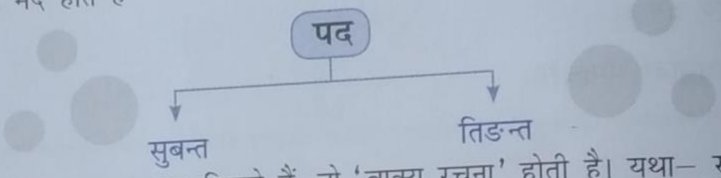

'सुबन्त' तथा 'तिङन्त' पद जब परस्पर मिलते हैं, तो 'वाक्य रचना' होती है। यथा– रामः गच्छति।

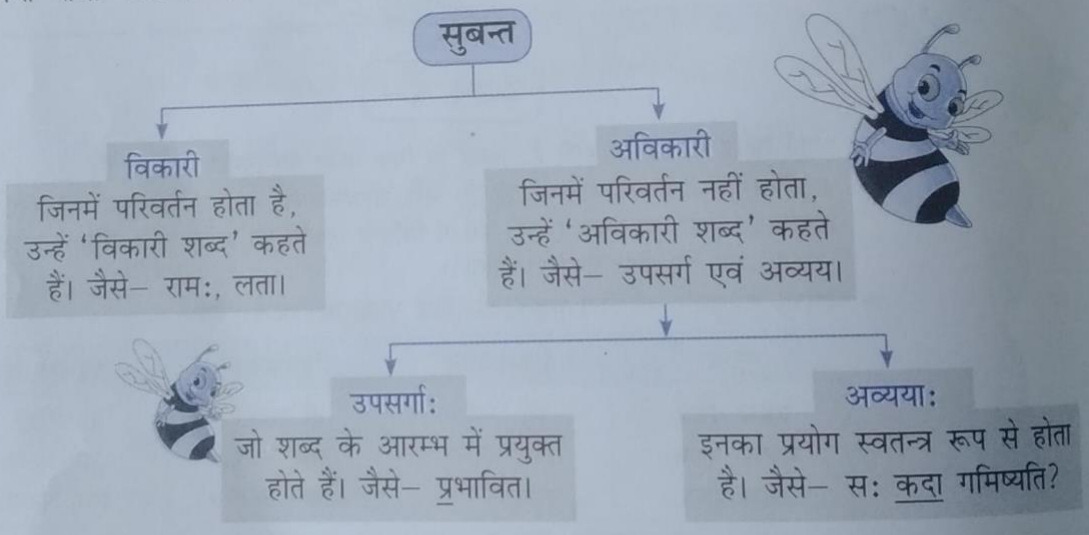

कारक-विचारः

जो क्रिया की सहायता करे, उसे कारक कहते हैं। कारक का प्रयोग वाक्यों में होता है। कारक ही संस्कृत में विभक्ति के रूप में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत में कर्ता हमेशा प्रथमा विभक्ति के रूप में प्रयुक्त होता है। यथा– बालः पठति।

कारक का नाम	चिह्न	विभक्ति
(*i*) कर्ता कारक:	ने	प्रथमा
(*ii*) कर्म कारक:	को	द्वितीया
(*iii*) करण-कारक:	के द्वारा, से	तृतीया
(*iv*) सम्प्रदान-कारक:	के लिए, को	चतुर्थी
(*v*) अपादान-कारक:	से (अलग)	पञ्चमी
(*vi*) सम्बन्ध-कारक:	का, के, की	षष्ठी
(*vii*) अधिकरण-कारक:	में, पर	सप्तमी
(*viii*) सम्बोधनम्	हे, भो, अरे	